मासिक पत्रिका दिसम्बर 2020

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल प्रधान | राजेन्द्र कुमार मंत्री | विजय भाटिया कोषाध्यक्ष

स्वामी श्रद्धानन्द

(स्वामी श्रद्धानन्द जी 23 दिसम्बर 1926 के दिन वीरगति को प्राप्त हुए। मुस्लिम युवक ने स्वामी जी पर तीन गोलियां चलाई थीं।)
वे तो वीर की तरह रहे और शहीद की तरह चले गए तथा भारत के सामने एक आदर्श-जीवन रख गए।

समाज के कल्याण के लिए मन समर्पित करने वालों की संख्या सर्वाधिक होती है। उसके बाद अधिक संख्या में वे लोग होते हैं जो धन समर्पित करते हैं। सबसे कम संख्या में वे लोग होते हैं जो तन अर्थात् अपना जीवन समर्पित करते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द (पूर्व नाम महात्मा मुंशीराम) उन विरले लोगों में से एक थे जिन्होंने अपने तन, मन, धन के साथ अपने दोनों पुत्र भी समाज के लिए समर्पित कर दिए थे। सर्वस्व समर्पित करने के बाद भी स्वामी जी को लोगों के आघात, आक्षेप, अवरोध झेलने पड़े। ऐसे समाज सेवी और त्यागमूर्ति महापुरुषों के साथ घटित अपमानजनक घटनाओं को देखकर कहना पड़ता है कि समाज बहुत निर्मम होता है और समाजसेवा करना लोहे के चने चबाना है।

यह अनुभव कोई नया नहीं अपितु बहुत पुराना है। महाराज भर्तृहरि ने कई हजार वर्ष पूर्व इस भाव को इन मार्मिक शब्दों में प्रकट किया था-

'सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः।'

सेवा-कार्य चाहे व्यक्तिगत हो अथवा सामाजिक हो, वह बहुत ही कठिन होता है और उसका पार पाना योगियों के लिए भी सम्भव नहीं। फिर भी जो लोग समाज सेवा में संलग्न रहते हैं, सचमुच वे फौलाद का दिल रखते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द ने सम्पन्न घर-जीवन त्यागा और सर्वत्यागी बन गए। गुरुकुल कांगड़ी का आरम्भ एवं संचालन किया, सबसे पहले वहाँ अपने दोनों पुत्रों को प्रविष्ट करके आदर्श प्रस्तुत किया। घर-घर जाकर गुरुकुल के लिए हाथ फैलाए और तन-मन के कष्टों की चिन्ता न करते हुए अपना जीवन होम किया। किन्तु उस समय के कथित आर्यों ने उनको चैन नहीं लेने दिया। आलोचना पर आलोचना और बाधा पर बाधा उपस्थित करते रहे। विवाद पर विवाद खड़ा करते रहे। स्वामी श्रद्धानन्द ने एक साथ कितनी ही चुनौतियों को झेला अंग्रेज सरकार की गुरुकुल के प्रति उठने वाली वक्रदृष्टि को, गुरुकुल की आन्तरिक समस्याओं को, कथित आर्य आधिकारियों की आलोचनाओं एवं बाधाओं को, समाज सेवा के कष्टों को, स्वतन्त्रता के आन्दोलनों की व्यस्तता को, मुसलमानों की धमकियों को। किन्तु फिर भी स्वामी जी अपने लक्ष्य पर निर्भय गजराज की तरह आगे बढ़ते रहे।

जब स्वामी जी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लक्ष्य के लिए राजनीति के रणक्षेत्र में चरण रखे तो एक से एक अभूतपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किए। स्वामी जी से पूर्व कोई भी इतना साहस नहीं दिखा पाया था कि अंग्रेजी शासकों की संगीनों के आगे सीना तानकर खड़ा हो जाए। स्वामी जी ने यह साहस भरा उदाहरण दिल्ली के घण्टाघर चांदनी चौक पर प्रस्तुत कर दिखाया। संगीनें झुक गयीं और स्वामी जी के नेतृत्व वाले जलूस को आगे बढ़ने दिया। सेना और पुलिस के संगीनधारी जवानों से चारों ओर से घिर कर भी स्वामी जी ने चांदनी चौक में अपनी सभा को जारी रखा। यह कोई सोच भी नहीं सकता था कि एक आर्यसंन्यासी को जामा मस्जिद में प्रवेश भी करने दिया जाएगा। किन्तु स्वामी जी को मुसलमानों ने वहाँ आमन्त्रित

किया और जामा मस्जिद की मिम्बर से उन्होंने वेद मन्त्रोच्चारण के साथ भाषण भी दिया।

स्वामी जी के जहाँ महात्मा गाँधी, लाला लाजपतराय, लोकमान्य तिलक, मोतीलाल नेहरू जैसे अग्रणी नेताओं से घनिष्ठ सम्बन्ध थे, वहीं अंग्रेज सरकार के अफसर और वायसराय तक उनका सम्मान करते थे। स्वामी जी के व्यक्तित्व में वह जादू था जो नेता, अधिकारी और जनता सबको अपनी ओर खींच लेता था। स्वामी जी स्वतन्त्रता-आन्दोलन के एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व हैं।

महर्षि दयानन्द प्रणीत आर्ष पाठविधि के प्रति पूर्ण श्रद्धावान् थे। उन्होंने यह अनुभव किया था कि अंग्रेजी शिक्षा पद्धति न तो राष्ट्र के लिए हितकर है और न भारतीय संस्कृति के लिए, इसलिए उन्होंने भारतीय आर्ष परम्परा के गुरुकुलों की स्थापना की।

छात्रों के लिए गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल कुरुक्षेत्र तथा कन्याओं के लिए गुरुकुल देहरादून। ये संस्थाएं आज भी चल रही हैं, श्रद्धानन्दीय स्वरूप को खोकर ही सही। फिर भी वे स्वामी जी की उज्ज्वल स्मृतियाँ हैं, भारतीय संस्कृति की प्रतीक हैं। वे तो वीर की तरह रहे और शहीद की तरह चले गए तथा भारत के सामने एक आदर्श-जीवन रख गए। ■■

साभार: आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक
मेरे पिता (स्वामी श्रद्धानन्द), लेखक-इन्द्र विद्यावाचस्पति

इच्छा-शक्ति (WILL-POWER)

'इच्छा-शक्ति (Will-Power) का शरीर पर प्रबल प्रभाव है। ऐसे प्रयोग हुए हैं जिनसे सिद्ध होता है कि 'इच्छा-शक्ति' से हृदय की गति तेज़ तथा धीमी की जा सकती है। यह तो प्रत्येक के अनुभव की बात है कि 'संवेग' (Emotion) से हृदय की गति इतनी धीमी पड़ सकती है कि मनुष्य की मृत्यु तक हो जाये। क्रोध अथवा भय का हृदय की गति पर एकदम प्रभाव पड़ता है। आतंक के कारण अनेक व्यक्ति मूर्च्छा तक के शिकार हो गये हैं, मर तक गये हैं। अगर शरीर के किसी भाग पर लगातार ध्यान केन्द्रित किया जाये, तो उसमें कुछ परिवर्तन हो सकते या किये जा सकते हैं। उदाहरणार्थ, ध्यान केन्द्रित करने से चेहरे में लाली या पीलापन लाया जा सकता है, किसी भी अंग में सूजन लायी जा सकती है। पाश्चात्य-जगत् में ईसाइयों में ऐसे दृष्टांत मिलते हैं जिनमें लगातार के ध्यान से ईसाई मठों में रहने वाले पादरियों ने अपने शरीर पर वे चिन्ह प्रकट कर लिये जो सूली पर लटकते समय ईसा के शरीर पर बेंतें मारे जाने के कारण पड़े थे। यह तो अनुभव की बात है कि किसी अंग पर लगातार ध्यान गड़ाय रखने से उस अंग में पीड़ा उत्पन्न की जा सकती है, इसी प्रकार लगातार के ध्यान से किसी अंग की पीड़ा दूर की जा सकती है। बहुत अधिक रोष करने से लार-ग्रन्थियों का रस सूख जाता है, मुँह खुश्क हो जाता है। चिन्ता या भय से पाचन-क्रिया नष्ट हो जाती है क्योंकि इन संवेगों से पेट के पाचक-रस निकलने बन्द हो जाते हैं। इस सबसे स्पष्ट हैं कि 'इच्छा-शक्ति' का हमारे जीवन को नियन्त्रित करने में बड़ा हाथ है।

अंग-प्रत्यंग के सुगठित होने तथा मन के प्रफुल्लित रहने-इन दोनों पर निर्भर है। ■■

साभार: बुढ़ापे से जवानी की ओर
लेखक-डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

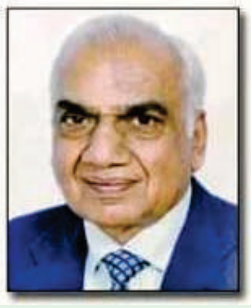

श्री योगेश मुन्जाल जी – हमारे आर्य समाज के संरक्षक – ऋषिजन्मभूमि टंकारा के कार्यकारी अध्यक्ष मनोनीत हुए हैं। आप पिछले 15 वर्षों से टंकारा ट्रस्ट के रूप में अपना सहयोग दे रहे हैं। हमारे आर्य समाज के लिये यह बड़े गौरव की बात है। इस अवसर पर हम सब की ओर से आपको हार्दिक अभिनन्दन व शुभकामनायें।

श्रद्धांजलि

श्री इन्द्र सेन साहनी जी

(12.02.1927 - 12.12.2020)

हमें अत्यंत दु:ख है कि हमारे आर्य समाज के संरक्षक व पूर्व प्रधान श्री इन्द्र सेन साहनी जी का निधन दिनांक 12 दिसम्बर 2020 को हो गया।

श्री साहनी जी का आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 को योगदान सदा याद रहेगा। वे संरक्षक से पहले, 8 वर्षों तक आर्य समाज के प्रधान पद पर रहे और आर्य समाज के प्रत्येक विभाग में उनके अथक परिश्रम तथा प्रयास की छाप है।

महर्षि दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय के नवीनीकरण, विशेष कर डेंटल विभाग, पैथोलॉजी लैब, स्वागत कक्ष, धर्मशाला एवं यज्ञशाला के नवीनीकरण का श्रेय भी उनको ही जाता है।

आर्य समाज के सब ओर अनुशासन तथा सफ़ाई का विशेष ध्यान रखा। श्री साहनी जी की आर्य समाज के प्रति आस्था तथा सेवाओं की प्रशंसा रूप उनको समाज का संरक्षक बनाकर सन् 2015 में सम्मानित किया गया।

तिनसुखिया में स्वामी दयानन्द सरस्वती स्कूल आपने खुलवाया। कई निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति का प्रबन्ध किया। आसाम में अराजकता के कारण दिल्ली वापस आये। चीन भारत युद्ध के समय तिनसुखिया आसाम में सेवा के लिये भण्डारे खुलवाये।

श्री साहनी जी मृदुभाषी, उत्कृष्ट गुणों, सिद्धान्तों और अनुशासन के व्यक्ति थे। यह हमारे आर्य समाज के लिए बहुत बड़ी क्षति है। हमारी आर्य समाज के प्रति उनका पूर्ण समर्पण आने वाले समय में याद किया जाएगा।

शोक समाचार

अभी हाल ही में बहुत से माननीय सदस्य हमें छोड़ कर चले गए।

हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी पुण्य आत्माओं को सद्गति प्रदान करे। हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

॥ ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

1.	श्रीमती संतोष रहेजा	आर्य समाज महिला सत्संग की भूतपर्व प्रधाना
2.	श्रीमती राज कुमारी मलिक	माननीय सदस्या
3.	श्रीमती वीना कश्यप	माननीय सदस्या
4.	श्री राजकुमार तंवर	माननीय सदस्य
5.	श्री इन्द्र सेन साहनी	संरक्षक, भूतपूर्व प्रधान
6.	श्री एस.सी. गुप्ता	माननीय सदस्य

आर्य समाज महिला सत्संग

साप्ताहिक, बृहस्पतिवार सत्संग

आर्य समाज महिला सत्संग-कैलाश ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली इस कोरोना आपदा के समय में पिछले कई माह से प्रत्येक बृहस्पतिवार को सत्संग का आयोजन Meet.Google पर कर रहा है। यह कार्यक्रम प्रत्येक बृहस्पतिवार को प्रातः 10:30 से 11:30 बजे तक होता है। कार्यक्रम में ईश्वर स्तूति प्रार्थना मंत्रों का पाठ, विभिन्न सदस्यों द्वारा भजन गायन और आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी का विभिन्न विषयों पर प्रवचन होता है।

आप सभी इस सत्संग कार्यक्रम में सादर आमंत्रित हैं और घर बैठे ही सत्संग का आनन्द उठाएं।

महाभारत से कुछ शिक्षाएँ

1. संतान की गलत माँग और हठ पर समय रहते अंकुश नहीं लगाया गया, तो अंत में आप असहाय हो जायेंगे।
2. संतान को इतना महत्वाकांक्षी मत बना दो कि विद्या का दुरुपयोग कर सर्वनाश को आमंत्रित करे।
3. कभी किसी को ऐसा वचन मत दो कि आपको अधर्मियों के आगे समर्पण करना पड़े।
4. संपत्ति, शक्ति व सत्ता का दुरुपयोग और दुराचारियों का साथ अंत में स्वयंनाश का दर्शन कराता है।
5. यदि व्यक्ति के पास विद्या, विवेक से बँधी हो तो विजय अवश्य मिलती है।
6. हर कार्य में छल, कपट, व प्रपंच रच कर आप हमेशा सफल नहीं हो सकते।
7. यदि आप नीति, धर्म, व कर्म का सफलता पूर्वक पालन करेंगे, तो विश्व की कोई भी शक्ति आपको पराजित नहीं कर सकती।

सन् 2020 का समापन हो गया है। यह वर्ष अन्य गत वर्षों से एक ऐसे वाइरस (विषाणु) से ग्रस्त रहा और अब भी है जिसका हल विश्व के सारे देश निकालने में व्यस्त है। आशा है कि नव वर्ष मे ऐसे हल निकलेंगे जिससे इस वाइरस से सम्पूर्ण विश्व को छुटकारा मिले।

नव वर्ष में सबको हार्दिक शुभकामनायें। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप तथा सम्पूर्ण प्रियजन स्वस्थ रहें।